मुहम्मद गोरी के आक्रमण के समय भारत की राजनीतिक दशा का वर्णन

Friday 13

मुहम्मद गोरी के आक्रमण के समय भारत की राजनीतिक दशा बड़ी शोचनीय थी। भारत के उत्तर पश्चिमी प्रदेशों में महमूद गजनी के वंश के शासकों का राज्य स्थित था। सिन्ध और मुल्तान में अरबों की बस्तियाँ थी उत्तरी भारत में राजपूतों के कई छोटे-बड़े राज्य थे। दिल्ली में तोमर वंश और अजमेर में चौहान वंश का राज्य था। चौहान राजा पृथ्वीराज वीर पुरुष था। इसने दिल्ली पर अधिकार कायम कर लिया था। इसका राज्य उत्तरी भारत में सबसे अधिक शक्तिशाली और विस्तृत बन गया था। कन्नौज के राठौर

Saturday 14

राजपूतों का शासन खत्म हो गया था और उनके स्थान पर सेनवंश की सत्ता का उदय हो रहा था। उस समय मगध का शासन चल रहा था। जम्मू-कश्मीर में भी हिन्दू राज्य था। पंजाब में गजनी शासकों के साथ बराबर संघर्ष चल रहा था

इन राज्यों में कुछ काफी शक्तिशाली थे। उनके पास विशाल सेना भी थी लेकिन हिन्दू राजाओं में पारस्परिक मेल या किसी प्रकार का सहयोग सम्भव नहीं था उनमें राष्ट्रीयता की भावना का पूर्ण अभाव था वे आपस में लड़ते झगड़ते रहते थे।

REDMI NOTE 9 PRO
AI QUAD CAMERA

इन बड़े-बड़े राज्यों के अलावा कई छोटे-छोटे राज्य थे उनमें भी एकता का अभाव था और वे आपस में लड़ते रहते थे। ~~एक~~सार्वभौमिक सत्ता के अभाव में देश विदेशी आक्रमकों के लिए आ[illegible] बन गया था।

गौरी का आक्रमण — सर्वप्रथम 1175 ई. में मुहम्मद गौरी का आक्रमण हुआ यह आक्रमण सिन्ध और झेलम नदियों के संगम पर स्थित ~~था~~ उच्छ राज्य पर हुआ था गौरी को विजय मिली और इस भूभाग को उसने अपने अधिकार में कर लिया। फिर तीन वर्ष बाद उसने गुजरात के राजा भीमदेव पर आक्रमण किया और पराजित भी किया लेकिन गौरी इससे हताश नहीं हुआ दो वर्ष वह सैनिक तैयारियों में लगा रहा। फिर पंजाब के गजनीवंश के शासकों के प्रदेश पर उसने आक्रमण कर दिया और पेशावर तथा उसके आसपास के प्रदेश जीतने में सफलता प्राप्त की। इस विजय से उत्साहित होकर अगले वर्ष उसने लाहौर पर भी हमला कर दिया लेकिन इस बार उसे पुनः पराजित होना पड़ा 1186 ई. में उसने पुनः लाहौर पर चढ़ाई कर उसपर अधिकार कर लिया।

लाहौर-पर विजय प्राप्त क

Tuesday 17

[illegible] से गौरी की हिम्मत काफी बढ़ गई। 1191 ई० में उसने दिल्ली पर चढ़ाई कर दी। उस समय दिल्ली पर चौहान वंश के महाराजा पृथ्वीराज का शासन था। पृथ्वीराज को पहले ही यह पता चल गया था कि गौरी उसके राज्य पर आक्रमण करने वाला है अतः वह गौरी का मुकाबला करने की तैयारी करने लगा। उसने युद्ध के लिए भारतीय राजाओं को संगठित किया और गौरी से भिड़ने के लिए थानेश्वर से चौदह मील की दूरी पर तराइन के मैदान में पहुँचा इधर गौरी भी पृथ्वीराज के सीमान्त नगर सरहिन्द पर अधिकार जमाता हुआ तराइन के मैदान में आ पहुँचा युद्ध का आरंभ होते ही राजपूतों ने भीषण वेग से गौरी की

Wednesday 18

सेना पर आक्रमण किया। राजपूतों ने इस युद्ध मे अपूर्व वीरता का प्रदर्शन किया और गौरी को अपार क्षति उठा पड़ी स्वयं गौरी युद्धभूमि में घायल हो गया। युद्ध मैदान से उसे भागना पड़ा। सरहिन्द पुनः पृथ्वीराज के कब्जे में आ गया।

A· तराइन का दूसरा युद्ध अगले

वर्ष 1192 ई० में हुआ मुहम्मद गौरी पराजय का बदला लेने के लिए दिल्ली पर हमला बोल दिया इस युद्ध में राजपूत बुरी तरह पराजित हुए। गौरी के सैनिकों ने पृथ्वीराज को कैद कर गजनी ले गया। जहाँ उन हत्या कर दी गई।

मुहम्मद गोरी ने पृथ्वीर
पुत्र को अजमेर का शासक स्वीकार कर लिया
क्योंकि वह वार्षिक कर देने के लिए राजी हो गया
दिल्ली में उसने अपने गुलाम कुतुबुद्दीन ने दिल्ली
और मेरठ पर अपना शासन स्थापित किया और
दिल्ली को नये मुस्लिम राज्य की राजधानी बनाया।
दो वर्ष बाद
सन् 1194 ई० में मुहम्मदगोरी कन्नौज पर पुनः
आक्रमण किया इस बार यह लड़ाई भारतीय नरेश
जयचन्द के साथ हुई। जयचन्द ने गोरी का
मुकाबला किया लेकिन युद्ध क्षेत्र में वह मारा गया
और राजपूत पूर्णतया निराश हो गये

20 Friday

कि कन्नौज पर गोरी का अधिकार हो गया था बाद
उसने बनारस पर भी अधिकार कर लिया इसके
उपरान्त मुहम्मदगोरी फिर अपना देश वापस चला
गया। लेकिन भारत में मुसलमानों का आक्रमण
जारी रहा। कुतुबुद्दीन ने ग्वालियर और गुजरात
पर अधिकार कर लिया 1202 ई० में कालपी और
कालिंजर अधिकार किया। गोरी के अन्य सहयोगी
बख्तियार ~~खिलजी~~ खिलजी ने भारत के ~~पूर्व~~
पूर्वी भागों पर विजय पाने का प्रयास किया
उसने बिहार, नालन्दा पर आक्रमण कर अधिकार

Saturday 21

फिर बंगाल पर आक्रमण किया पालवंशीय राजा लक्ष्मण सेन राजधानी छोड़कर भाग खड़ा हुआ इस प्रकार बिहार और बंगाल पर भी मुसलमानों का अधिकार हो गया।

Sunday 22

REDMI NOTE 9 PRO
AI QUAD CAMERA